राम की शक्ति-पूजा : मिथक और आधुनिकता

प्रांजलि देवी

प्रस्तुत शोध-आलेख का उद्देश्य सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रसिद्ध कविता 'राम की शक्ति-पूजा' में मिथक और आधुनिकता के प्रसंगों का अध्ययन करना है। भारतीय संस्कृति में प्रचलित पौराणिक राम-सीता का आख्यान कविता का कथाधार है। हालांकि निराला ने कृतिवास की 'बांग्ला-रामायण' को शक्ति-पूजा का मूल स्रोत बनाया है। 'राम की शक्ति-पूजा' में मिथकीय प्रसंगों और आधुनिकता के नव-आयामों दोनों का रूप देखने के लिए मिलता है। इस आलेख में राम की शक्ति पूजा कविता को आधार बना कर मिथक और आधुनिकता दोनों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने की कोशिश की गई है।

'राम की शक्ति-पूजा' कविता निराला के आत्मनिर्वासन एवं आत्मस्थापन का संश्लिष्ट दस्तावेज है, जो वर्ष 1936 में प्रकाशित हुई। राम की शक्ति-पूजा का मुख्य स्रोत कृतिवास की 'बांग्ला-रामायण' है, किंतु 'बांग्ला-रामायण' की कथा में वर्णन की स्थूलता, भावुकता एवं अर्थ में एकहरापन है; वहीं निराला की 'शक्ति-पूजा' में प्रतीकात्मक, बिम्बात्मकता, भावोत्पादकता एवं वर्णन की सक्ष्माभिव्यक्ति आदि विशेषताएं मौजूद हैं। डॉ.बच्चन सिंह 'राम की शक्ति-पूजा' और 'बांग्ला-रामायण' की तुलना करते हुए लिखते हैं कि "बांग्ला-रामायण जितनी बहिर्मुखी है राम की शक्ति-पूजा उतनी ही अंतर्मुखी।"राम की शक्ति-पूजा में कवि ने आत्मचेतन को विश्वचेतन के रूप में साकार करने के लिए भारतीय संस्कृति में प्रचलित मिथकों का सहारा लिया है। राम की शक्ति-पूजा में दो कविताओं का सारतत्व है- तुलसीदास और सरोज-स्मृति का। इनके अलावा एक अपराजित मन की कल्पना और दूसरे अपराजित मन के अस्तित्व की अनुभूति है। राम और रावण की सेना के युद्ध में राम अपनी सेना की पराजय एवं दिव्यास्त्रों की असफलता से विचलित होकर शक्ति की उपासना करते हैं। यह मिथकीय प्रसंग कविता के शीर्षक को सार्थकता प्रदान करता है।

प्रस्तुत आलेख का विषय मिथक और आधुनिकता के संदर्भ में राम की शक्ति पूजा का वर्णन करना है। अतः सर्वप्रथम मिथक पर विचार करना होगा और समझना होगा कि मिथक क्या है? मिथक की समाज में निर्मिति और स्वीकारता कैसे हुई ? यह 'शक्ति-पूजा' में किन प्रसंगों में प्रयोग किया गया है ? मिथक पौराणिक-कथा को नवीन संदर्भ में किस प्रकार नवीन अर्थ-वत्ता प्रदान करता है? आदि कुछ प्रश्न है जो हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं। 'मिथक' अंग्रेजी के 'Myth' शब्द का हिंदी प्रतिरूप है। मिथक का संबंध 'मौखिक-कथा' से माना जाता है। हिंदी में मिथक के लिए 'पुरा-वृत्त', 'पुरा-कथा', 'देव-कथा', 'धर्म-कथा', 'पुराण-कथा' 'पुराख्यान' आदि अनेक शब्द प्रचलित है ; किंतु हिंदी में 'मिथक' शब्द को ही सर्वमान्य माना गया है। आरंभिक मनुष्य द्वारा कल्पित अतिमानवीय शक्तियां कालांतर में मिथक बनीं। आदिमानव प्राकृतिक शक्तियों तथा व्यापारों के रहस्यों को पूरी तरह समझने-समझाने में असमर्थ होने के कारण ईश्वरीय शक्ति को आधार मान लेता था। धीरे-धीरे यह कथाएं धर्म-कथा,

धार्मिक-आख्यान, एवं कर्मकांड बनते-बिगड़ते संस्कृति का अभिन्न अंग बन जाती हैं। डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव मिथक की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि "मानव मस्तिष्क की विश्व-व्यापकता, मानव-मात्र की संरचनात्मक मूलभूत समानता के उदघोषक हैं। विश्व और विश्व की वस्तुओं तथा इसमें रहने वाले प्राणियों के उद्भव से संबंधित मिथक सर्वत्र एक जैसे हैं। देव-रूपों और उनके नामों में मिलने वाली अद्भुत समानताओं के पीछे मानवीय मस्तिष्क की एकता ही है।" प्राचीन पुराकथाओं का तत्व जो नवीन स्थितियों में नए अर्थ का वहन कर सके, वह मिथक कहलाता है। मिथकों का जन्म समाज-व्यवस्था को कायम करने के लिए हुआ ऐसा प्रसिद्ध समाजशास्त्री इमाइल दुर्खीम मानते हैं। मिथक लोक-विश्वास से जन्मते हैं। पुरातन काल में स्थापित किए गए धार्मिक मिथकों का मंतव्य स्वर्ग तथा नरक का लोग भय दिखाकर लोगों को विसंगतियों से दूर रखना था। काल की निरन्तर प्रवाहमान धारा में मिथक शब्द का अर्थ-विस्तार होता रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि मिथक के अन्तर्गत लोक-साहित्य, मानव-विज्ञान, समाज-विज्ञान, मनोविश्लेषण तथा ललित-कथाएं आदि सभी समाहित हो जाते हैं। यही कारण है कि मिथक आज की आलोचना का एक सशक्त महत्वपूर्ण और लोकप्रिय पहलू बनता जा रहा है।

हिंदी साहित्य का उद्भव एवं विकास निरंतर मिथकों से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। आदिकालीन साहित्य के आरंभ से ही 'स्वयंभू' का 'पऊमचरिउ' (रामकथा) एवं 'पुष्पदंत' का कृष्ण काव्य मिथकीय कथा के आधार पर अधिरचित किए गए थे। अतः कहने का तात्पर्य है कि साहित्य के सभी युगों में लेखकों ने मिथकों का आश्रय लिया है। हिंदी कविता में 'प्रियप्रवास', 'साकेत', 'पंचवटी-प्रसंग', 'यशोधरा', 'कामायनी', 'राम की शक्ति-पूजा', 'द्रौपदी', 'भस्मांकुर', 'अंधायुग', 'महाप्रस्थान', 'कनुप्रिया', 'शबरी', 'शंबूक-वध', 'संशय की एक रात', 'उर्वशी', 'रश्मिरथी' आदि ऐसे महाकाव्य और खण्डकाव्य है जिनकी निर्मिति में मिथकीय कथा को युगीन-समस्याओं एवं प्रतीकात्मक बिंबों के माध्यम से आधुनिक भाव-बोधों का चित्रण किया गया है और पौराणिक मिथकों को नवीन-अर्थवत्ता प्रदान की गई है। समय-समय पर मिथकों की उपज साहित्य को नव-आयामों से विभूषित करती रही है। मिथक वह शक्ति है, वह ओज है, भाव-बोध है जिसकी साहित्य में उपादेयता को शब्दबद्ध कर पाना सरल नहीं है। विद्वान अन्सार्ट कैसिरार 'मिथक' का क्षेत्र इतना व्यापक मानते हैं कि 'मानव जीवन का कोई भी क्रियाकलाप ऐसा नहीं है जो मिथकीय न हो। "

कोई भी महान कवि अपने समय की गहराई से जुड़ा होता है। वह अपने समय के राजनैतिक, सामाजिक एवं मानसिक संघर्षों को प्रतीकात्मक आख्यान के जरिए रचता है ; इसी के अंतर्गत 'राम की शक्ति-पूजा' को रख कर देख सकते हैं। वर्ष 1936 के आसपास भारतीय स्वाधीनता संग्राम निरुत्साहिता के दौर में था। असहयोग-आंदोलन, चौरी-चौरा कांड, काकोरी कांड, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भगत सिंह, सुखदेव, और राजगुरु को फांसी, कम्युनल अवार्ड, आदि घटनाओं के निरंतर घटित होने के कारण भारतीय जनमानस में हताशा और निराशा के बादल छाए हुए थे। जनता में आन्दोलन की स्वत: स्फूर्ति हेतु गांधीजी जमीन तलाश रहे थे। इधर निराला एक-के-बाद एक पिताजी की असामयिक मृत्यु, पत्नी मनोहरा देवी की असामयिक मृत्यु, पुत्री सरोज की असामयिक मृत्यु से अन्तर तक टूट चुके थे। निराला का आत्म संघर्ष गुम्फित रूप में अभिव्यक्त होने के लिए विराट रूप धारण कर रहा था, तो उधर गांधी व देश की जनता का मन पराजय से भरा था। ऐसे समय में निराला ने एक ऐसे प्रसंगों को चुना ; जहां राम युद्ध के कारण निराशा एवं हताशा के शिकार हैं। 'राम की शक्ति-पूजा' में राम निराला, गांधी जी, एवं देश की समस्त जनता के प्रतीक है जो युद्ध के परिणामों को लेकर संशय की स्थिति में है। डॉ बच्चन सिंह ने लिखा है कि "निराला की समस्त रचनाओं में युग-बोध, जातीय-जीवन का तेवर एवं वैयक्तिक यातना का अद्भुत मिश्रण हुआ है।"

'राम की शक्ति-पूजा' मिथकीय चेतना का अद्वितीय महाकाव्य है। इसकी कथा राम, सीता, हनुमान, महाशक्ति देवी-दुर्गा की पौराणिक कथा का आलंबन लेकर रची गई है। रामायण की कथा तमिल, तेलुगू, ओड़िया, बांग्ला, कन्नड़, मलयालम लगभग सभी भारतीय भाषाओं में लिखी गई। निराला ने बाल्मिकी कृत 'संस्कृत रामायण' एवं कृतिवास की 'बांग्ला-रामायण' की कथा को आधार बनाकर 'राम की शक्ति-पूजा' की रचना की है। निराला की शक्ति पूजा में युगीन- चेतना, मिथकीय-चेतना,भाषाई-चेतना, बिम्बीय-चेतना का ऐसा अद्वितीय मिश्रण है कि आधुनिकता और मिथकीय दोनों रूपों को एक साथ अभिव्यक्त करने में सफल सिद्ध होती हैं। 'राम की शक्ति-पूजा' में मिथकीय कथा का वर्णन राम को रावण की जीत एवं अपनी हार का संशय, महाशक्ति का रावण के पक्ष में होना, हनुमान का ऊर्ध्वपातन, राम द्वारा शक्ति की आराधना,देवी का कमल चुराना, राम द्वारा कमल के एवज में अपना नेत्र अर्पित करना एवं महाशक्ति देवी दुर्गा द्वारा राम को वरदान देना और राम के बदन में लीन होना आदि मिथकीय प्रसंग हैं।

'राम की शक्ति-पूजा' का आरंभ 'रवि हुआ अस्त' पंक्ति से होता है अर्थात् सूर्यास्त के बाद रात्रि हो चुकी है जिसमें आकाश अंधकार उगल रहा है। राम-रावण की सेना का युद्ध शाम के समय समाप्ति की ओर है। राम-रावण की सेना के दिन भर के अनिर्णायक युद्ध के बाद अमानिशा के घने अंधकार, दिशाओं के अज्ञान, पवनों की स्तब्धता,समुद्र की अप्रतिहत गर्जना के महाअंधकार में राम का

अंतर्द्वंद और गहरा होता जा रहा है। राम हार के संशय को लेकर भयभीत हैं। निराला लिखते हैं कि-

'है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान ; स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भधर ज्यों ध्यानमग्न; केवल जलती मशाल।
'रह रह उठता जग-जीवन में रावण जय भय।'

इसी आशंका के बारे में सोचते-सोचते राम के आंखों से आंसुओं की धारा प्रवाहित होने लगती है। राम को लगता है कि रावण के साथ महाशक्ति है जो राम के प्रत्येक वार को, प्रत्येक अस्त्र-शस्त्र को निष्फल कर दे रही है। 'राम की शक्ति-पूजा' में हनुमान का उर्ध्वपातन अति चमत्कारिक है। हनुमान को ईश्वरीय गुणों से युक्त रूप में प्रस्तुत करता है। हनुमान राम के आंसू देख कर क्रोधित होकर महाविनाश के लिए उद्धत हो उठते हैं। हनुमान के प्रबल उद्वेग को रोकने करने के लिए देवताओं की आकस्मात् सभा बुलायी जाती है। हनुमान के क्रोध को शमित करने का उपाय देवता खोजने लगते हैं। महाशक्ति को हनुमान का क्रोध शमित करने करने की सलाह दी जाती है। महाशक्ति येन-केन-प्रकारेण परम भक्त हनुमान को मनाने-समझाने का प्रयत्न करती हैं। यह प्रसंग विशुद्ध रूप से मिथकीय चेतना पर आधारित है। विशुद्ध रूप से माननीय क्रिया-कलापों कु क्षेत्र से कई गुना अपेत है। डॉ. अमरनाथ लिखते हैं कि "निराला की शक्ति-पूजा' में भी अति प्राकृत तत्व और अनुष्ठानों का विधान किया गया है। हनुमान का ऊर्ध्वपातन अतिप्राकृत तत्त्व है। शक्ति-पूजा के अनुष्ठान को उसकी प्रतीकात्मकता में सार्वभौम बना दिया गया है।"एक अन्य प्रसंग है कि युद्ध में महाशक्ति रावण का साथ दे रही थी। उसे अपने पक्ष में करने के लिए समर छोड़ कर राम नवरात्र में खंडित न होने वाली देवी-दुर्गा की पूजा का अनुष्ठान करते हैं। जामवंत राम को 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना;करो पूजन' की सलाह देते हैं। राम देवी-दुर्गा का अनुष्ठान करते हैं तभी महा-शक्ति राम की परीक्षा लेती हैं और एक कमल चुरा लेती हैं। राम को याद आता है कि बचपन में मां उन्हें 'राजीव-नयन' कहती थी ; इस कारण राम अपना एक नयन शक्ति को अर्पित करने का निर्णय लेते हैं;तभी शक्ति प्रकट होती है और दर्शन देती हैं। राम द्वारा शक्ति की पूजा का अनुष्ठान सफल होता है। शक्ति राम को विजय-वर देती है कि-

होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।।

यहां पर देवी-दुर्गा का जो वर्णन निराला ने किया है, वह विशुद्ध रूप से पौराणिकता का शब्दात्मक बिम्ब है और शक्ति की पौराणिक छवि प्रस्तुत करता है।

उदाहरण दृष्टव्य है-

साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम!"
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर-स्कन्ध पर, रहा दक्षिण हरि पर।
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित।
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बायें रणरंग राग,
मस्तक पर शंकर! पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वर वन्दन कर।

'राम की शक्ति-पूजा' में आधुनिकता के विविध आयाम है। राम निराला के अपराजित मन, गांधी की निरुत्साहितता, संशय और द्वन्द्व और भारतीय जनता के पराजित न होने वाले मन का प्रतीक है तो दूसरी तरफ राम भारतीय जनमानस एवं मध्यवर्गीय परिवार में संघर्षरत सामान्य मानव के प्रतीक के रूप में चित्रित किए गए हैं। निराला ने राम के चरित्र को वाल्मीकि के राम और तुलसी के राम से अलग।

आधुनिक मानव के रूप में वर्णित किया है। आधुनिकता द्वितीय विश्वयुद्ध के समय से प्रचलित एक नया शब्द है। राम के आधुनिक चरित्र को समझने से पहले आधुनिकता की अवधारणा को समझना आवश्यक है। आधुनिकता अंग्रेजी के 'Modernity' शब्द का हिंदी रूपांतरण है। आधुनिकता को परिभाषित करते हुए 'हिंदी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली' में डॉ अमरनाथ लिखते हैं कि "आधुनिकता धर्म, प्रकृति, परंपरा, नैतिकता, प्रतिबद्धता, आस्था, मूल्य तथा प्रत्येक प्रचलित विचार तथा वस्तुस्थिति और व्यवस्था को चुनौती देती है। विद्रोह उसका मूल स्वर है।"निराला ने एक ऐसे प्रसंग को चुना है जिसके माध्यम से वह अपनी विषम परिस्थितियों को व्यक्त कर सकें। निराला का जीवन एक ओर गार्हस्थिक स्थितियों के प्रतिकूल था तो दूसरी ओर साहित्यिक जीवन की आलोचनाओं से। ऐसे में निराला पूर्व प्रचलित उक्ति के माध्यम से कहते है कि 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति'। तत्कालीन औपनिवेशिक शासन में प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों की विजय का प्रतीक माना जा सकता है कि शक्ति अधिकांशतः अन्याय के पक्ष में हो जाती है। वर्तमान राजनीति, चुनावी समीकरण, पैसे का दुरुपयोग करके आपराधिक उम्मीदवार जनता के राजा बनकर विकास और न्याय के बैनर तले नफरत, साम्प्रदायिक भाषणों आदि के माध्यम से शक्ति का दुरूपयोग करते हैं। निराला ने 'शक्ति' की मौलिक कल्पना की बात की। रावण को औपनिवेशिक सत्ता का प्रतीक माने एवं राम को भारतीय स्वाधीनता संग्राम के नेता गांधी जी को तो; यह कविता अधिक सार्थक अर्थ देने लगती है। जामवंत सत्य असत्य का विभेद

करते हुए शक्ति की मौलिक कल्पना करने की सलाह देते हैं।

उदाहरण देखें-

रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त,
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।

यहां पर सत्य-असत्य का संघर्ष अलग-अलग मुखौटों में हर दौर में दिखाई पड़ता है। सत्य के पक्ष को असत्य से टकराने के लिए शक्ति की मौलिक कल्पनाएँ करनी ही पड़ती हैं। गांधी द्वारा 'अहिंसा' को शक्ति बना देना ऐसी ही मौलिक कल्पना का परिणाम था। इन पंक्तियों में मिथक के माध्यम से आधुनिकता का एक ऐसा अर्थ निकलता है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्थितियों का वर्णन नए दृष्टिकोण से किया जा सकता है।

आदि शक्ति देवी-दुर्गा द्वारा चुराया गया नीलकमल का मिथक का प्रसंग, राम-सीता का प्रेम, निराला-मनोहरा देवी के प्रेम के साथ-साथ 'स्त्री-मुक्ति' की कामना भी है; राम के मन में बार-बार रावण के घर में कैद सीता की छवि कौंध जाती है। निराला का आत्मनिर्वासन 'तुलसीदास' में रत्नावली के माध्यम से तो 'सरोज-स्मृति' में सरोज की सेज सजाते हुए निराला अपनी प्रिया को याद करते हैं। 'राम की शक्ति-पूजा' में निराला स्वयं को धिक्कारते हुए लिखते हैं कि-

जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका।
वह एक और मन रहा राम का जो न थका।

इस कथन का राम के मुख से निकलना इस बात का प्रमाण है कि सीता की मुक्ति ही कविता का केंद्रीय तत्व है। राम-रावण का युद्ध भी सीता की रक्षा के लिए होता है। 'नारी-मुक्ति' निराला का स्थायी भाव है।' साहित्य परंपरा में पुत्र के प्रति वात्सल्य तो खूब दिखता है किंतु 'सरोज-स्मृति' में पुत्री के प्रति वात्सल्य दिखाकर एवं 'शक्ति-पूजा' में पत्नी के प्रति स्नेह दिखाकर रूढ़िवादी पुरुष प्रधान समाज में 'नारी-मुक्ति' का आवाहन करते हुए निराला आधुनिकता का परिचय देते हैं। निराला आत्मभर्त्सना करते हुए लिखते हैं -

धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

निराला के राम भगवान राम नहीं है; बल्कि मानव राम है, पुरुषोत्तम राम हैं। एक सामान्य व्यक्ति की तरह राम के अंदर भी आन्तरिक व्याकुलता एवं छटपटाहट साकार हो जाती है। उनके नेत्रों से चुपचाप अश्रुओं की धारा प्रवाहित होने लगती है। 'राम की शक्ति-पूजा' की प्रमुख विशेषता यह है कि परंपरागत राम के देवत्व रूप से अधिक आधुनिक जीवन के धरातल पर एक सामान्य मनुष्य की भांति खड़े होते हैं। 'राम की शक्ति-पूजा' में आधुनिकता का प्रमुख तत्व यह है कि कवि ने पौराणिक या ऐतिहासिक आख्यान लेकर रचनात्मक कल्पना के माध्यम से एक ओर प्राचीन वातावरण को अत्यंत सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है तो वहीं दूसरी ओर आधुनिक जीवन के द्वन्द्व को भी तीखे ढंग से व्यक्त किया है। राम की मानवीयता, उनका संशय, निराशा से ग्रस्त होना, उनकी विवशता और निरुपायता का एहसास तथा संकट के दौर में प्रिया सीता की याद आना; राम के चरित्र को और आधुनिक बनाता है जिससे आज का मध्यवर्गीय पाठक उसके प्रति आत्मीयता अनुभव कर पाता है। मुक्तिबोध ने लिखा है कि "आज का रामचरितमानस पढ़ते समय राम के चरित्र से जो आंसू निकलते हैं, वे सामंती विश्व दृष्टि के आंसू हैं। उस विचार से 'शक्ति-पूजा' के राम की विवशता देखकर यदि हम द्रवित होते हैं तो उसका संबंध आज के यथार्थ से हैं।"

'राम की शक्ति-पूजा' में एक ऐसे प्रसंग की कथा को आधार बनाया गया है,जिसकी वस्तुसंरचना एक साथ कई पक्षों को समेटती है। सीता की मुक्ति इस कविता का कविता केंद्रीय तत्व तो है लेकिन एकमात्र नहीं है। क्योंकि यह कविता राष्ट्रीय आंदोलन, शक्ति की मौलिक कल्पना,पौराणिक राम का मानवीय रूपांतरण, निराला का आत्मसंघर्ष, सत्य-असत्य संघर्ष जैसे बिंदुओं को आधार लेकर आधुनिकता की पृष्ठभूमि पर खरी उतरती है। वास्तव में 'शक्ति-पूजा' हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक उपलब्धि के साथ-साथ खड़ीबोली की ओजस्वी रचनाशीलता की पहली कविता है।

संदर्भ-सूची

1. सिंह, बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. श्रीवास्तव, जगदीश प्रसाद, मिथकीय कल्पना और आधुनिक हिंदी काव्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1985
3. शर्मा, रामविलास, निराला की साहित्य साधना, राजकमल प्रकाशन, नईदिल्ली, 2021
4. नवल, नन्दकिशोर, निराला और मुक्तिबोध, चार लम्बी कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
5. सिंह, दूधनाथ, निराला आत्महन्ता आस्था, लोकभारती प्रकाशन,नई दिल्ली, 2014
6. सिंह, बच्चन, क्रांतिकारी कवि निराला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2003
7. वही पृ. सं. 353
8. शर्मा, रामविलास(संपा.)राग-विराग, साहित्य सरोवर प्रकाशन, आगरा, 2018
9. Kavitakosh.Org/kk/राम की शक्ति-पूजा/सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
10. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020
11. वही, पृ. सं. 283